प्रेमचन्द साहित्य : नारी मुक्ति का सोपान

डॉ. मिन्नत
असि० प्रोफेसर-हिन्दी
कु० मायावती राजकीय महिला
पी.जी. कॉलेज, बादलपुर, गौतमबुद्धनगर

शोध सारांश

रचना कृतिकार का दर्पण होती है जिसमें कृतिकार के विचारों की प्रतिछाया प्रदर्शित होती है। लेखक अपनी विचार प्रक्रिया ही रचना में ढालता है इसलिए रचना विचाराभिव्यक्ति का साधन है। प्रेमचन्द एक ऐसे ही कृतिकार है जो तत्कालीन समाज में नारियों की स्थिति को लेकर चिंतित थे। नारियों की स्थिति को सुधारने के लिए वे आर्य समाज और गांधी जी के आन्दोलन के पक्षधर थे। बाल विवाह के विरोधी थे और विधवा विवाह के समर्थक। नारियों के लिए वे पुरुषों के समान अधिकार की मांग करते थे। प्रेमचन्द ने अपने साहित्य में नारी समस्याओं को अधिक कलात्मकता, सूक्ष्मता एवं गम्भीरता से प्रस्तुत किया है।

प्रारम्भ से ही प्रेमचन्द नारी स्वाधीनता के प्रति चिंतित दिखायी देते हैं। भारतीय इतिहास पर दृष्टि डालते हुए प्रेमचन्द ने निष्कर्ष निकाला कि स्त्री चिरकाल से पुरुष द्वारा शोषित एवं आश्रित है। उसे अधीनस्थ बनाकर रखने के लिए बुद्धिजीवी पुरुष समाज ने अनेक कुप्रथाओं का सृजन किया है। आर्थिक रूप से शोषित होने के कारण ही उसका सामाजिक शोषण यथा पर्दा-प्रथा, वेश्या समस्या, दहेज आदि के माध्यम से किया जाता रहा। शोषण को कायम रखने के लिए नैतिक मूल्यों का निर्माण सुविधानुसार करके धार्मिक रूप से भी स्त्री को पंगु बना दिया। प्रेमचन्द ने रचनात्मक साहित्य

और वैचारिक साहित्य दोनों स्तरों पर इस शो
मार्ग दिखाया। उनके साहित्य में नारी पराधी
एक ऐसा वर्ग है जो पुरुष के शोषण को चुपच
धार्मिक रूढ़िवादिता की शिकार है। वह ना
प्रताड़ित रहना बेहतर समझती है। एक दू
तर्क वितर्क कर शोषण का विरोध करती है।
संघर्ष को उद्यत हो जाती है। साथ ही आर्थिक
का प्रतिकार करती है। ये तीनों वर्ग प्रेमचन्द
दिखाई पड़ते हैं। वे जागृत नारी को हर क्षेत्र

नारी जागृति का एक रूप धनिया
की रूढ़ मान्यताओं को भी नहीं तोड़ पाती
है। दूसरा रूप मालती का है जो पाश्चात्य
परम्परा को नया आयाम देती हुई भारतीय सं
ही पश्चिमी सभ्यता एवं संस्कृति को ग्रहण क
सिलिया जैसी निम्न जाति की नारियों का है
करती हैं। चौथा रूप मीनाक्षी जैसी अमीर औ
है जो सामाजिक धार्मिक शोषण को एक झा
से अलग स्वतंत्र जीवन की कल्पना साकार
विरोध तलाक, न्यायशीलता और दृढ़ता से

प्रेमचन्द ने नारी शोषण की तस्वीर
ही खींची है बल्कि विचारात्मक साहित्य में
सामाजिक, पारिवारिक सभी प्रकार के शोषण
वर्ग को संघर्षरत दिखाया है। एक बात अव
कर पूरे काल तक अन्तर्विरोध पालन करता
वर्ग भी है जो न केवल विरोध करता है अपि
कहानी 'शिकार' में नौकरानी मुनिया
कर कोई क्या खिलाएगा सरकार! मर्द
में काम करते हैं। बाहर के काम से तो
काम से तो रात को भी छुट्टी नहीं मिल
है "स्त्रियों को धर्म और त्याग